INTERNATIONAL JOURNAL OF HISTORY

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(2): 261-265
Received: 02-09-2024
Accepted: 06-10-2024

रवि शंकर
शोधार्थी, इतिहास विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रवि शंकर
शोधार्थी, इतिहास विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारण प्रमंडल के महान गांधीवादी योद्धाः ब्रजकिशोर प्रसाद

रवि शंकर

DOI: https://dx.doi.org/10.22271/27069109.2024.v6.i2d.322

प्रस्तावना
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में गांधीवादी विचारधारा का एक अति महत्वपूर्ण स्थान रहा है । बिहार से संबंध रखने वाले एक ऐसे ही गांधीवादी नेता ब्रजकिशोर प्रसाद थे । वे सारण प्रमंडल से ताल्लुक रखते थे । एक उम्दा वकील होने के साथ–साथ वे एक उत्कृष्ट स्वतंत्रता सेनानी एवं सामाजिक कार्यकर्ता भी थे । चंपारण सत्याग्रह में उन्होंने महात्मा गांधी का बखूबी साथ दिया, साथ ही वे किसानों के मुद्दे आजीवन उठाते रहे एवं महिला–शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए किए गए उनके प्रयास बिहार तथा भारत के इतिहास में अविस्मरणीय स्थान रखते हैं ।

महत्वपूर्ण शब्दावली
महात्मा गांधी, ब्रजकिशोर प्रसाद, विचारधारा, चम्पारण सत्याग्रह, राजकुमार शुक्ला, राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, सारण स्वतन्त्रता संग्राम में उत्तरी बिहार में स्थित सारण क्षेत्र का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भौगोलिक रूप से सारण भारत की तीन प्रमुख नदियों गंगा, घाघरा और गण्डक से घिरा हुआ है। यह अपवाह तंत्र प्राचीन काल से ही सारण के निवासियों को देश के अन्य हिस्से से जोड़ने में सुगम जलमार्ग प्रदान करता आया है। ऐतिहासिक रूप से सारण का वर्णन अनेक साहित्यक ग्रन्थों में प्राप्त होता है, जिसमें शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ सर्वप्रमुख है।[1] उत्तर वेदिक काल से ही सारण कोसल राज्य का हिस्सा था। यह कोसल राज्य के पूर्वी सीमा पर स्थित था, और इसका वर्णन उत्तरवैदिक ग्रन्थों में एक सशक्त क्षत्रिय साम्राज्य के रूप में मिलता है।[2] ज्ञातव्य है कि एक राज्य के रूप में कोसल का वर्णन ऋग्वेद की सुक्तियों में नहीं मिलता। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार जब आर्यजन पंजाब से पूर्व की ओर अग्निदेव (वैश्वनार) के साथ बढ़े तब आधुनिक उत्तर बिहार में स्थित गण्डक नदी जिसे वैदिक ग्रन्थों में सदानिरा कहा गया है। यह पश्चिम और पूर्व भागों में बस गये। सदानिरा (गण्डक) ही सारण के पूर्वी भागों का निर्माण करती है तथा यही तक कोसल राज्य भी था। सदानिरा गण्डक के पूर्वी तरफ विदेह राज्य था। जिसके प्रसिद्ध राजा जनक कहलाते थे जहाँ आज मिथिला संस्कृति प्रसिद्ध है। रामायण और महाभारत में भी कोसल के इस पूर्वी भाग का वर्णन मिलता है। सम्भवतः यही पर कही ऋषि श्रृंगी का भी आश्रम था एवं महाभारत काल में राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के दौरान भीमसेन, श्रीकृष्ण और अर्जुन कोसल होते हुए मिथिला तक गए थे। इस यात्रा के दौरान सम्भवतः वे सारण होकर मिथिला गए थे।[3] उस समय कोसल का राजा बृहदबल था जिसने युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार कर जी। पुरातात्विक साक्ष्यों की बात करें तो सारण स्थित चिरांद से नवपाषाणकालीन एवं ताम्रपाषाणकालीन अनेक हिरण–सिंगों से निर्मित अनेक उपयोगी औजार एवं लघु हथियार प्राप्त हुए है। पुराणों के अनुसार कोसल देश पर इक्ष्वाकु वंश के राजा का शासन था। महाजनपद काल एवं बौद्ध काल के दौरान भी सारण एक प्रमुख धार्मिक एवं व्यापारिक केन्द्र था। सर अलेक्जैंडर कनिंघम के अनुसार बौद्ध काल में सारण के गंगा घाघरा तटीय क्षेत्र पर रहने वाले कुछ नरभक्षी लोगो ने गौतम बुद्ध के प्रभाव में आकर उनका अनुशरण किया, जिसकी स्मृति में मौर्य सम्राट अशोक ने वहा एक स्तूप अथवा स्मारक बनवाया। जिससे यह क्षेत्र स्रण अथवा शरण् नाम से प्रसिद्ध हुआ, जो कालान्तर में सारण कहलाया। एक अन्य वृतान्त के अनुसार सारण नाम की उत्पत्ति सारंग–अरण्य से हुई है; यहाँ के जंगलों में हिरणों का वास था। एक अन्य मत के अनुसार शक्र–अरण्य ही सारण कहलाया अर्थात् देवराज इन्द्र का जंगल।[4] कार्लाइल महोदय के अनुसार सारण में ही दीघवारा स्थित गौतम बुद्ध के द्रोण स्तूप (कुम्भ स्तूप) के साथ ही एक नारायण भगवान का मंदिर भी था जो नारायणपुर में स्थित था। यह ग्राम बाढ़ में बह गया। चीनी चात्री हेनसांग के अनुसार सारण क्षेत्र हर्ष काल में चेंचू राज्य (गाजीपुर) का हिस्सा था।

महाजनपद काल में यह क्षेत्र अपनी गणराज्यीय परम्पराओं और गुणों के कारण प्राचीन इतिहास काल में प्रसिद्ध रहा है। प्राचीन काल तथा मध्यकाल में यह क्षेत्र अनेक महान साम्राज्यों यथा नंद–मौर्य साम्राज्य से लेकर मुगल साम्राज्य का हिस्सा रहा। जब यूरोपीय व्यापारी भारत में व्यापार करने आए, डचों ने सबसे पहले–पहले रिविलगंज में शोरा उत्पादन उद्योग शुरू किया। यूरोपीयन यात्री ट्रेवरनियर एवं बर्ननियर ने अपने सन् 1666 के वर्णन में कहा है ''हॉलैण्ड कम्पनी का यहाँ ठिकाना है जहाँ वे शोरा का व्यापार करते है, जिसे वे महान शहर छपरा में परिष्कृत करते है।''[5]

शोरा व्यापार के कारण अंग्रेज व्यापारी भी छपरा (सारण) की ओर आकर्षित हुए, क्योंकि बारूद बनाने के लिए शोरा की काफी मांग थी। सन् अगस्त 1757 में आयरकूट एक छोटी सैन्य टुकड़ी के साथ सारण पहुँचा।[6] सारण पर ब्रिटिश कब्जा 2 जून 1764 को हो पाया जहाँ पर अग्रेजों ने अस्थायी बैरक बनाकर अपने टुकड़ी को स्थापित किया। इस प्रकार सारण में अंग्रेजों का प्रभाव जम गया। दो वर्ष पश्चात् प्रसिद्ध ब्रिटिश जनरल रॉबर्ट क्लाइव जनरल करनॉक के साथ स्वंय छपरा पंहुचा जहाँ उसने श्वेत क्रांति को शांत किया। भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में सारण का काफी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सारण में राष्ट्रीय चेतना का जागरण लगभग उसी समय हुआ, जब राष्ट्र स्तर पर इस भावना का उदय और प्रचार–प्रसार हो रहा था। प्राचीन ग्रन्थों में भी सारण के बाशिंदों को काफी उद्यमशील एवं पराक्रमी कहा गया है।[7] 1857 की क्रांति में 10 मई को मेरठ में हुई घटनाओं की खबर जब सारण पंहुची, तब वहाँ की आम जनता में भी खलबली मच गई, परन्तु सारण का एक वर्ग कम्पनी राज का सहयोगी बना रहा। ऐसी मान्यता है कि जगदीशपुर के राजपूत जमींदार कुँवर सिंह नें शाहाबाद–सारण क्षेत्र से अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकने की गुप्त–मंत्रणा क्रांति–वर्ष से संभवतः कुछ पहले ही सोनपुर–मेले में अपने विश्वास–पात्र लोगों से की थी।[8]

महात्मा गांधी के नेतृत्व में जब स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जन आंदोलन शुरू हुआ तब बिहारवासियों ने भी इसमें बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। सारण प्रमण्डल के सीवान जिला में श्रीनगर गाँव में जन्में ब्रजकिशोर प्रसाद एक ऐसे ही स्वतन्त्रता सेनानी थे। श्रीनगर गाँव, जहाँ ब्रजकिशोर प्रसाद का जन्म हुआ दाहा नदी के तट पर सीवान कचहरी के निकट स्थित है। ब्रजकिशोर प्रसाद का जन्म 14 जनवरी 1877 ई० को एक कायस्थ परिवार में हुआ था। सारण क्षेत्र में कायस्थ समाज के अधिकांश लोग नौकरी पेशा थे तथा कार्यालयी कार्यों में सलग्न थे।[9] इनके पिता का नाम रामजीवन लाल तथा माता का नाम समुद्री देवी था। इनके अग्रज़ ब्रजकुमार सहाय एवं बहन जनककिशोरी देवी थीं। मात्र 11 वर्ष की आयु में ही इनका विवाह फूलझरी देवी से 1888 ई० में हो गया। फूलझरी देवी सढ़वारा, छपरा के गुरू प्रसाद सिंह की सुपुत्री थी। फूलझरी देवी ने अपने पति ब्रजकिशोर प्रसाद का हर परिस्थिति में साथ दिया, तब भी जब महात्मा गाँधी के आहवान पर उन्होंने अपनी सफल वकालत को छोड़कर सत्याग्रह में भाग लेने का फैसला किया। इनसे इन्हें दो पुत्र विश्वनाथ प्रसाद एवं शिवनाथ प्रसाद एवं दो पुत्रियाँ प्रभावती देवी और विद्यावती देवी प्राप्त हुई। ब्रज किशोर प्रसाद की बड़ी पुत्री प्रभावती का विवाह सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण से हुआ जो सारण से ही थे। दूसरी पुत्री का विवाह प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के सुपुत्र मृत्युंजय प्रसाद से हुआ। बड़े पुत्र विश्वनाथ प्रसाद का विवाह सावित्री देवी एवं छोटे पुत्र शिवनाथ प्रसाद का विवाह सुशीला देवी से हुआ।[10] ब्रजकिशोर प्रसाद के पिताजी की नौकरी दक्षिण बिहार स्थित गाँव में अफीम के गोदाम में थी। घर पर पढ़ने–लिखने का अच्छा माहौल था तथा ब्रजकिशोर प्रसाद नें बचपन में अपने घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी आदि भाषाएँ सीख ली। विवाह के उपरान्त भी ब्रजकिशोर बाबु ने अपनी पढ़ाई जारी रखी तथा 1890 में गाँव के प्रसिद्ध जिला स्कूल से मैट्रिक उत्तीर्ण किया। आगे की बी०ए० और एम०ए० की पढ़ाई के लिए वे कलकत्ता चले गए। एक सफल विद्यार्थी के रूप में 1898 में कलकत्ता के प्रसिद्ध कॉलेज से वकालत की पढ़ाई पूरी की और एक पेशेवर वकील बने। उन्होंने 1898 में दर्शनशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर किया। चूँकि इसी बीच में इनके पिताजी का देहान्त हो गया था इसीलिए परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए, इन्होनें छपरा (सारण) में वकालत कर परिवार का भरण–पोषण शुरू किया। ज्ञातव्य हो कि तब छपरा सदर वकालत के लिए पूरे भारतवर्ष में मशहूर था। वकालत पेशे के अन्दर ब्रजकिशोर प्रसाद ने बहुत नाम कमाया।[11] डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा को ये अपना गुरू मानते थे। उन्ही की सलाह पर ब्रजकिशोर प्रसाद दरभंगा चले गए। अपनी उत्कृष्ट वाचन प्रतिभा के कारण वे शीघ्र ही दरभंगा के सफल वकीलों में शामिल हो गए। डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा की देख रेख में इन्होनें राजनीति में अपने प्रथम कदम बढ़ाये। जब डॉ० सिन्हा इम्पीरियल कौसिंल के चुनाव में दरभंगा महाराज के विरूद्ध खड़े हुए तब ब्रजकिशोर बाबू ने डॉ० सिन्हा के लिए चुनावी प्रचार–प्रसार किया। तत्पश्चात् राजनीति में उनकी सक्रियता बढ़ती गई। 1910 में वे दरभंगा नगर परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए। एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में उनकी पहचान पूरे बंगाल परिक्षेत्र में बन गई। उस समय बिहार क्षेत्र बंगाल का ही हिस्सा हुआ करता था। ब्रजकिशोर प्रसाद बंगाल विधान परिषद् के 1910 में निर्वाचित सदस्य बने। डॉ० सच्चिदानंद सिन्हा, महेश नारायण, मजहरूल हक, अली ईमाम, हसन ईमाम आदि के नेतृत्व में पृथक बिहार प्रान्त के निर्माण के लिए एक आन्दोलन चल रहा था। ब्रजकिशोर प्रसाद भी पृथक बिहार आन्दोलन में शामिल हो गए। इन सब महापुरूषों के प्रयास से बिहार प्रदेश काँग्रेस का गठन हुआ जिसके अध्यक्ष हसनईमाम बनाए गए। आन्दोलन इतना प्रभावशाली साबित हुआ कि 12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली में आयोजित शाही दरबार में बिहार और उड़ीसा को बंगाल से पृथक एक नए प्रान्त के रूप में संगठित करने की घोषणा ब्रिटिश सम्राट द्वारा की गई।[12] नया प्रान्त 1 अप्रैल 1912 से विधिवत् अस्तित्व में आया। इस प्रकार बिहार अब अपनी पृथक पहचान के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन का हिस्सा बन चुका था। इस नए परिवेश में ब्रजकिशोर प्रसाद बिहार और उड़ीसा विधान परिषद् के सदस्य निर्वाचित हुए। राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम बार ब्रजकिशोर प्रसाद का नाम तब फैला, जब सन् 1912 में पटना के बाँकीपुर में कॉग्रेस का 27 वाँ सम्मेलन आयोजित हुआ इसके अध्यक्ष आर०एन० मुधोलकर बने। कॉग्रेस के इस राष्ट्रीय सम्मेलन को आयोजित करने की जिम्मेवारी मुख्य रूप से ब्रजकिशोर प्रसाद की थी। 1911 में बिहार बैंक की स्थापना में भी प्रसाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा।[13]

पृथक बिहार प्रान्त निर्माण में तत्कालीन भारत के वॉयसराय लॉर्ड हार्डिंग की काफी महत्वपूर्ण भूमिका थी। अतः वॉयसराय लॉर्ड हार्डिंग के सम्मान में 1913 में हार्डिंग मैमोरियल समिति की स्थापना की गई। ब्रजकिशोर प्रसाद भी समिति के सदस्य थे। इस समिति ने पटना में हार्डिंग पार्क का निर्माण कराया जो आज भी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। अब इसे शहीद वीर कुंवर सिंह आजादी पार्क के नाम से जाना जाता है। 10 अप्रैल 1914 को बाँकीपुर में बिहार प्रांतीय कांग्रेस सम्मेलन के अपने अध्यक्षीय भाषण में ब्रजकिशोर बाबू नें बिहार के किसानों के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया।

महात्मा गांधी 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेश में भाग लेने आये थे। वहीं पर उनकी मुलाकात चम्पारण के एक किसान राजकुमार शुक्ला से हुई। उस समय राजकुमार शुक्ला हाफिज दिन मोहम्मद के अधीन काम करते थे। और उन्हें गांधी जी से सम्पर्क करने के लिए लखनऊ भेजा गया था। राजकुमार शुक्ला ने गाँधी जी से मिलकर उन्हें चम्पारण के भोले भाले एवं गरीब

किसानों के शोषण के बारे में अवगत कराया तथा आग्रह किया कि गाँधी जी उसके साथ चम्पारण चले तथा वहाँ के किसानों को तीन कठिया पद्धति के कष्टों से मुक्त कराने का प्रयास करें। ज्ञातव्य है कि चम्पारण क्षेत्र में यूरोपियन बगान मालिक एक लम्बे समय से वहाँ के किसानों का निर्मम शोषण करते आ रहे थे। यूरोपियन जमींदार वहाँ किसानों को बलपूर्वक नील की खेती के लिए बाध्य करते थे। प्रत्येक बीघा पर किसानों को तीन कट्ठे में नील की खेती अनिवार्य रूप से करनी पड़ती थी। इसी व्यवस्था को तीन कठिया व्यवस्था कहते थे। इसके बदले में किसानों को उचित मजदूरी नही मिलती थी और भूमि पर भी बुरा प्रभाव पड़ता था। कानून द्वारा पुष्ट और डण्डे के बल पर लागू होने वाली यह व्यवस्था इतनी क्रूर थी कि किसान उसके बोझ तले कराह रहे थे।[14] तीन कठिया के विरूद्ध चम्पारण के किसानों का असंतोष स्थानीय, मझौले और धनी किसान नेताओं के नेतृत्व में 1860 के दशक से ही बढ़ता चला आ रहा था।[15]

जब राजकुमार शुक्ला ने गाँधी जी को चम्पारण के किसानों को नील की खेती से हो रहे कष्टों के बारे में अवगत कराया तब गाँधी जी ने अपने जीवन में न तो चम्पारण के बारे में सुना था और नाहीं वे नील की खेती के बारे में कुछ जानते थे। राजकुमार शुक्ला को गाँधी जी ने एक मासूम, असभ्य लेकिन कट्टर किसान के रूप में समझा और उसकी सादगी से प्रभावित हुए।[16] राजकुमार शुक्ला के साथ ही गाँधी जी ''वकील बाबू'' ब्रजकिशोर प्रसाद भी मिले।''

''वकील बाबू, आपको हमारे कष्टों के बारे में बताएगे।'' राजकुमार शुक्ला ने ब्रजकिशोर बाबू को प्रथम बार गाँधी जी से परिचय कराया।[17]

ब्रजकिशोर प्रसाद का गाँधी जी पर कुछ खास प्रभाव नहीं पड़ा। इस मुलाकात के बारे में गाँधीजी ने बाद में लिखा – ''उन्होनें काले रंग की ऊन से बनी अचकन और पैंट पहनी हुई थी। मुझे लगा कि वे एक साधारण वकील थे जो सीधे साधे किसानों का शोषण कर रहे थे।''[18] परन्तु जब गाँधी जी चम्पारण पहुँचे और उनसे दुबारा मिलने ब्रजकिशोर प्रसाद दरभंगा से आए तब गाँधी जी के विचार ब्रजकिशोर बाबू के विषय में बदल गए थे।

''ब्रजकिशोर बाबू दरभंगा से आए और राजेंद्र बाबू पुरी से। ब्रजकिशोर बाबू वे ब्रजकिशोर नहीं थे, जिनसे मैं लखनऊ में मिला था। इस बार उन्होंने अपनी विनम्रता, सादगी, अच्छाई और असाधारण विश्वास, जो कि बिहारियों की खासियत है, उससे मुझे प्रभावित कर दिया था और यह देखकर मेरा हृदय बहुत प्रसन्न था। बिहारी वकीलों की उनके प्रति श्रद्धा मेरे लिए एक आश्चर्य की बात थी। शीघ्र ही मैं दोस्तों के इस समूह से जिदंगी भर के लिए दोस्ती के बन्धन में बंध गया। ब्रजकिशोर बाबू ने मुझे केस के बारे में बताया। अक्सर वे इन गरीब किसानों के मामलों को अदालत में लड़ा करते थे। इस तरह के दो बचे हुए केसों में मैं उनके साथ गया था। जब वे किसी भी एक केस को जीत जाते, तब वे अपने को यह कहकर संतुष्ट करते कि आखिर वे इन गरीब किसानों के लिए कुछ करने की कोशिश तो कर रहे है। ऐसा नहीं था कि वे इनसे कुछ शुल्क नहीं लेते थे, लेकिन वकीलों का यह मानना था कि अगर वे नहीं लेगे तो उनके पास अपने घर के पालन पोषण के लिए कुछ नही रहेगा और वे गरीब लोगों की मद्द नही कर सकेगे।''[19]

कमिश्नर के चम्पारण छोड़ने का आदेश न मानकर और दंड स्वीकार कर गाँधी जी ने अंग्रेजों को तो हतप्रभ किया हीं, साथ ही स्थानीय किसानों को अंग्रेजी सरकार के दंड के भय से भी मुक्त किया। चम्पारण ही नही वरन् आसपास के क्षेत्रों यथा सारण, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, गाजीपुर आदि से भी आकर किसानों ने अपने–अपने बयान दर्ज कराये। चम्पारण में ब्रजकिशोर प्रसाद अन्य सहयोगियों–राजेंद्र प्रसाद, महादेव देसाई, नरहरि पारिख, आचार्य कृपलानी जिन्हें जूडिथ ब्राउन नें ''शिकमी ठेकेदार'' कहा है, गाँधी जी के साथ सवेरे ग्रामीण इलाकों में निकल जाते थे, और दिन भर घूम–घूमकर बयान दर्ज करते। जब तसल्ली हो जाती कि किसान सही कह रहे हैं तब उनका बयान दर्ज करते।[20] चम्पारण सत्याग्रह के दौरान ब्रजकिशोर प्रसाद और अन्य स्थानीय बिहारी नेताओं ने जो गाँधी जी की मद्द की खासकर स्थानीय रैयतों के बयानों को दर्ज करने में उसनें ब्रिटीश अधिकारीयों को चौकन्ना कर दिया था। अंग्रेज अफसरों को यह लगने लगा था कि ब्रजकिशोर प्रसाद आदि स्थानीय नेता बिहार में ब्रिटिश–राज विरोधी भावनाऐं भड़काने का प्रयास कर रहे थे। बेतियाराज के प्रबन्धक जे०टी० विट्टी ने 27 अप्रैल 1917 को एल०एफ० मोरसहेड़, आयुक्त तिरहुत प्रमंडल को लिखे अपने पत्र में यह आशंका जताई थी। यूरोपीयन बगान मालिको ने ब्रजकिशोर बाबू को बदनाम करने का भी प्रयास किया।[21] उन्हें तथा उनके अन्य साथियों को नमक–हराम, उपद्रवी एवं राजद्रोही कहकर सम्बोधित किया। इस कटु आलोचना और संदेह ने ब्रजकिशोर प्रसाद को गरीब किसानों को यूरोपीयन नीलहों के अत्याचारो से मुक्त कराने के लिए और अधिक प्रेरित ही किया। इसकी बानगी हमें इस बात से मिलती है, कि ब्रजकिशोर बाबू ने जहाँ 22 अप्रैल 1917 को एक किसान का बयान दर्ज किया, वही 23 अप्रैल 1917 को 19 किसानों का बयान दर्ज किया, 24 अप्रैल को अलग–अलग बैठकों को मिलाकर 40 किसानों का बयान दर्ज किया तथा 25 अप्रैल को 28 किसानों का बयान दर्ज किया। इन बयानों में मूसई राऊत के पुत्र दीलू राऊत (आयु 70 वर्ष) का बयान बेहद मार्मिक होने के कारण उल्लेखनीय है; जिसमें राऊत ने बगान मालिकों के अत्याचारों का वर्णन किया है।[22] ज्ञातव्य हो कि महात्मा गाँधी को चम्पारण बुलाने वाले राजकुमार शुक्ला जब गाँधी जी को अपने गाँव मुरली भैरहवाँ ले गए तो वहाँ उन्होनें गाँधी जी को अपना मकान दिखाया, जिसे बगान मालिकों के द्वारा भेजे गए गुंडों द्वारा लूट लिया गया था।

चम्पारण सत्याग्रह में गाँधी जी एवं उनके सहयोगियों ब्रजकिशोर प्रसाद, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह, रामनवमी प्रसाद, शम्भूशरण वर्मा, धरनीधर प्रसाद, चन्द्रदेव नारायण सिंह आदि की सफलता की पुष्टि बेतिया के अनुमण्डल पदाधिकारी डब्लू०एच० लेविस के अप्रैल 1917 को मोतीहारी के जिलाधिकारी मिस्टर हेकॉक को लिखे पत्रों में स्पष्ट हो जाती है, जब वे गाँधी जी को 'स्थानीय रैयतों के मुक्तिदात्ता' कह के सम्बोधित करते हैं। उल्लेखनीय है कि गाँधी जी ने 1917 की चम्पारण की घटनाओं का वर्णन करते हुए लिखा कि ''.....यह कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि जब भी मैं रैयतों से मिलता था, तब मैं ईश्वर, अहिसा और सत्य के सम्मुख होता था।''[23]

चम्पारण सत्याग्रह के अपने सहयोगियों के बारे में गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा में वर्णन किया है, ''ब्रजकिशोर बाबू और राजेन्द्र प्रसाद एक बेजोड़ जोड़ी थी। उनकी सहायता के बिना एक कदम भी नही उठा सकता था। उनके अनुयायी या सहयोगी शम्भू बाबू, अनुराग बाबू, धरणी बाबू, रामनवमी बाबू और अन्य वकील हमारे साथ हमेशा रहते थे। विनय बाबू और जनकधारी बाबू भी कभी–कभी हमारी मद्द के लिए आ जाते थे। ये सब बिहारी थे। इनका मुख्य कार्य किसानों से बयान लेना था। प्रोफेसर कृपलानी पूरी तरह से हमारे साथ थे। सिंधी होने के बावजूद वे जन्मजात बिहारियों से ज्यादा बिहारी थे। ..... मौलाना मजहरूल हक ने मद्द देने वालों की सूची में अपना नाम लिखवाया हुआ था, जिनपर मैं भरोसा कर सकता था।''[24]

अन्ततः सरकार को गाँधी जी के आगे झुकना पड़ा तथा उसने नवंबर 1918 में 'चंम्पारण कृषि कानून' पारित कर किसानों को यूरोपियन निलहों के शोषण से मुक्त किया।[25]

उत्तरी बिहार में बिताए छः महीनों में गाँधी जी ने जो रचनात्मक कार्यों की नींव डाली थी, ब्रजकिशोर बाबू और अन्य सहयोगियों ने उसमें बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। शिक्षा एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में ब्रजकिशोर प्रसाद का योगदान बिहार के इतिहास में अद्वितीय है।

चंम्पारण सत्याग्रह में ब्रजकिशोर प्रसाद के सहयोग को महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में काफी स्नेहपूर्वक स्मरण किया है तथा ब्रजकिशोर बाबू को बिहारी सज्जन तथा 'अभिन्न मित्र' कहकर सबोधित किया है।

1920 में जब महात्मा गाँधी ने रौलेट एक्ट एवं जलियावाला बाग नरसंहार के विरूद्ध राष्ट्रव्यापी असहयोग तथा खिलाफत आन्दोलन किया तो ब्रजकिशोर बाबू अपनी सफल बकालत छोड़कर पूरे तन–मन–धन से उसमें कूद पड़े। सारण तथा तिरहुत क्षेत्र में ब्रजकिशोर प्रसाद नें डॉ० राजेन्द्र प्रसाद तथा मजहरूल हक के साथ मिलकर गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन को अहिंसक तथा प्रभावी बनाए रखा।

दिसम्बर 1922 में बिहार के गया में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन होना तय हुआ। ब्रजकिशोर प्रसाद बिहार के एक अतिमहत्वपूर्ण नेता होने के कारण अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बनाए गये। इस अधिवेशन में पुनः कांग्रेस–विभाजन हुआ।

1928 में जब बिहार प्रांतीय कांग्रेस समिति का गठन हुआ तब ब्रजकिशोर बाबू बिहार के अन्य महत्वपूर्ण नेताओं दीपनारायण तथा शाह मुहम्मद जुबैर के साथ प्रांतीय समिति के उपाध्यक्ष चुने गये। उत्तरी बिहार खासकर सारण क्षेत्र में कांग्रेस के प्रचार–प्रसार एवं जमीनी–स्तर के कार्यकर्ताओं को गाँधीवादी तरीकों में प्रशिक्षित करने में ब्रजकिशोर बाबू ने महत्ती भूमिका निभाई। 1930 के नमक सत्याग्रह में भी सरयू–गंगा तट तक सत्याग्रही जत्थे में वे शामिल थे। बिहार में चौकीदारी–कर के खिलाफ चल रहे आन्दोलन में उन्होंने सारण में भाग लिया तथा गरीब जनता को इससे मुक्त कराने का काम किया। गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा में ब्रजकिशोर बाबू के बारे में सटीक वर्णन करते हुए लिखा है कि – ''बिहार के गरीब किसानों के मुद्दे को लेकर वकील बाबू सार्वजनिक संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाते थे। अगले वर्ष 26 जनवरी 1931 को लाहौर प्रस्ताव (1929) के तद्नुसार संपूर्ण भारतवर्ष में स्वतंत्रता–दिवस मनाया गया तो पटना में भी भवँरपोखर पार्क में ब्रजकिशोर प्रसाद ने डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और प्रोफेसर अब्दुल बारी के साथ मिलकर ध्वजारोहण किया। सभी स्वतंत्रता–सेनानियों ने भारतमाता को ब्रिटीश हुकूमत के चंगुल से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त कराने का संकल्प लिया। 6 फरवरी 1921 को जब महात्मा गाँधी अपनी धर्मपत्नी कस्तूरबा एवं मोहम्मद अली के साथ पटना आए तब उन्होंने ऐतिहासिक बिहार विद्यापीठ का अपने करकमलों से उद्घाटन किया, जो पहले से ही पटना–गया रोड पर संचालित हो रहा था। मौलाना मजहरूल हक को बिहार विद्यापीठ का कुलाधिपति बनाया गया। बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद बिहार विद्यापीठ के कुलपति तथा डॉ० राजेन्द्र प्रसाद इसके प्राचार्य बने। अपने उद्घाटन भाषण में महात्मा गाँधी ने बाबू ब्रजकिशोर तथा बाबू राजेन्द्र प्रसाद को अपने दो भ्राता कहकर सम्बोधित किया तथा चम्पारण सत्याग्रह के दिनों को याद करते हुए कहा कि जब बहुत कम लोग उनका साथ देने को तैयार थे तब इन दो महानुभावों ने उनका साथ दिया।[26] अतः हम कह सकते है कि ब्रजकिशोर प्रसाद मौलाना मजहरूल हक, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद और उनके सह्योगियों ने असहयोग आंदोलन के साथ–साथ राष्ट्रीय शिक्षा को बिहार में व्यापक स्तर पर प्रचारित–प्रसारित किया। इन अन्य सहयोगियों में रामवृक्ष शर्मा 'बेनीपुरी', फूलन प्रसाद वर्मा, प्रजापति मिश्रा, जगलाल चौधरी, के०बी० सहाय, अब्दुलबारी शामिल थे। शिक्षा में किए गए अपने योगदान के कारण दक्षिण भारत के प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता चक्रवर्त्ती राजगोपालाचारी ने ब्रजकिशोर प्रसाद की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि वे अपने समकालिको से दिल और दिमाग में कही आगे थे।

बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद ने बिहार में छात्र–राजनीति को भी प्रेरित किया। सन् 1906 में युवा राजेन्द्र प्रसाद के साथ मिलकर पटना में बिहारी छात्र–सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन के मंच से बिहारी अस्मिता की आवाज को बुलन्द करने का काम इन युवा सारण वासियों द्वारा किया गया। ऐसे ही दरभंगा जिला बोर्ड के सदस्य के रूप में भी बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद ने व्यापक स्तर पर जनसंपर्क स्थापित कर बिहार में राजनीतिक एवं सामाजिक बदलाव का प्रयास किया।

जन संवाद एवं जन संपर्क में बाबू ब्रजकिशोर अद्वितीय थे। शहरी तथा ग्रामीण दोनों ही काफी सहजता से ब्रजकिशोर प्रसाद से मिलते थे, तथा अपना सुख–दुख साझा करते थे। महात्मा गाँधी ने सत्य ही उन्हें 'बिहार के सार्वजनिक कार्यों की आत्मा' कहा है।

ब्रजकिशोर बाबू महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलने वाले स्वतंत्रता–संग्राम का एक प्रमुख चेहरा बन चुके थे। अतः ब्रिटीश हुकूमत ने उनपर शिकंजा कसने की ठान ली थी। बिहार के प्रमुख स्वतंत्रता–सेनानियों की एक मीटिंग 3 जनवरी 1932 को डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में पटना के सदाकत आश्रम में आयोजित हुई। तभी ब्रिटिश पुलिस को इसकी खबर लगी। उन्होंने आश्रम पर छापा मारा, जिसमें बिहार के अनेक नामचीन आन्दोलन कारी गिरफ्तार कर लिए गए। इसमें ब्रजकिशोर बाबू, जगतनारायण लाल, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद, मथुरा प्रसाद, प्रजापति मिश्र, कृष्णवल्लभ सहाय आदि शामिल थे। सदाकत आश्रम को कुर्की कर लिया गया। ब्रजकिशोर बाबू को पाँच माह कैद की सजा हुई। उन्हें पहले बांकीपुर जेल में रखा गया फिर हजारीबाग जेल में स्थानतंरित कर दिया गया। जेल में रहते हुए ही ब्रजकिशोर प्रसाद की तबियत अत्यधिक खराब रहने लगी, ऐसी आशंका जताई गई कि ब्रिटिश हुकूमत ने उन्हें जहर दे दिया था। जब वे रिहा हुए तब अपनी अस्वस्थता के बावजूद भी उन्होंने महात्मा गाँधी के रचनात्मक कार्यों में यथा, महिला सशक्तिकरण एवं महिला शिक्षा अछूतोद्वार, हिन्दु–मुस्लिम एकता में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद, राजेन्द्र बाबू एवं उनके अनुयायी युवा कपिलदेव प्रसाद ने सीवान–सारण क्षेत्र में सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र में महिला–शिक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए काफी परिश्रम किया जिसमें महिला विद्यालयो एवं कॉलेजो की स्थापना तथा पर्दा विरोधी आंदोलन प्रमुख थे।[27] कपिलदेव श्रीवास्तव ने सारण में छात्र–संघ एवं छात्र–राजनीति की नींव रखी । स्वयं ब्रजकिशोर बाबू की पुत्री प्रभावती जब पाश्चात्य संस्कृति के कपड़े पहनती, तब पिता ब्रजकिशोर प्रसाद उन्हें रोकने के बजाय और प्रोत्साहित हीं करते। 1934 में बिहार के उत्तरी एवं मध्य भाग में भयंकर भूकम्प आया और लाखों लोगों की जान गई, तब दरभंगा जिला राहत समिति का इन्हें ऑफिस–इंचार्ज बनाया गया।[28] महात्मा गाँधी के निर्देशानुसार इन्होंने राहत–कार्य को कुशलता पूर्वक अंजाम दिया। जीवन के अंतिम वर्षों में ब्रजकिशोर बाबू अपने पुत्र विश्वनाथ प्रसाद के साथ दरभंगा चले गए। वे गठिया एवं दांत की बीमारी से पीड़ित रहने लगे एवं गंभीर अस्वस्थता के कारण 15 अक्टूबर 1946 दोपहर के एक बजे उनकी दरभंगा में ही मृत्यु हो गई।[29] उनकी मृत्यु पर महात्मा गाँधी ने अपने 'सज्जन बिहारी मित्र' को प्रार्थना–सभा में भावपूर्ण श्रद्धांजली दी। बिहार के यशस्वी नेता डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें याद करते हुए अपनी आत्मकथा में लिखा कि ''बिहार सदा अपने इस देशभक्त के प्रति विभिन्न सेवाओं के लिए कृतज्ञ रहेगा।''[30]

संदर्भ सूची

1. क़मर अहसन और इमत्याज़ अहमद, बिहार एक परिचय, पटना नेशनल पब्लिकेशन, 1994, पृ० 538
2. P. C. Roy Chaudhary, Bihar District Gazetteer: Saran, Ministry of Culture, Publication date: 1960, P. 14
3. वहीं, पृ० 15
4. L. S. S. O'malley, Bengal District Gazetteers: Saran, The Bengal Secretariat Book Depot, Calcutta, 1908, P. 17

5. वहीं, पृ० 21
6. वहीं, पृ० 23
7. P.C. Roy Chaudhary, Bihar District Gazetteer: Saran, 1960, P. 82
8. वहीं, पृ० 58
9. सच्चिदानन्द सिन्हा, ब्रजकिशोर प्रसाद, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2018, नई दिल्ली, पृ० 13
10. वहीं, पृ० 12
11. साक्षात्कार, 16.09.2024, उज्जवल भारद्वाज पुत्र अशोक कुमार दुबे, आयु 36 वर्ष, हॉस्पिटल रोड, मोतीहारी, चम्पारण, बिहार
12. क़मर अहसन और इमत्याज़ अहमद, बिहार एक परिचय, पटना, नेशनल पब्लिकेशन, 1999, पृ० 48
13. एस० के० वर्मा, ब्रजकिशोर प्रसाद, साहित्य परिषद, सिवान, सारण, बिहार, 1962, पृ० 28–29
14. महात्मा गाँधी, एन ऑटोबायोग्राफी, प्रकाश बुक्स इंण्डिया प्राइवेट लिमिटेड़, नई दिल्ली, 2021, पृ० 396
15. शेखर बंद्योपाध्याय, पलासी से विभाजन तक और उसके बादः आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, 2017, पृ० 290
16. महात्मा गाँधी, एन ऑटोबायोग्राफी, पृ० 383
17. वहीं,
18. वहीं, पृ० 384
19. वहीं, पृ० 387
20. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, चम्पारण में महात्मा गाँधी, बिहार राष्ट्रभाषा परिवद, पटना, 1965, पृ० 311
21. साक्षात्कार, 27.09.2024, उज्जवल भारद्वाज पुत्र अशोक कुमार दुबे, आयु 36 वर्ष, हॉस्पिटल रोड, मोतीहारी, चम्पारण, बिहार
22. डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, चम्पारण में महात्मा गाँधी, पृ० 312
23. महात्मा गाँधी, एन ऑटोबायोग्राफी, पृ० 391
24. वहीं, पृ० 397
25. शेखर बंद्योपाध्याय, पलासी से विभाजन तक और उसके बादः आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, 2017, पृ० 291
26. पटना में महात्मा गाँधी का भाषण, सम्पूर्ण गाँधी वांग्मय, Vol. 22, फरवरी 1921
27. साक्षात्कार, 20.05.2022, अखिलेश सिंह, मणि शंकर, कनक सिंह, रमण सिंह, मनोज सिंह एवं अन्य, ग्राम जीरादेई सीवान, सारण, बिहार
28. सच्चिदानन्द सिन्हा, ब्रजकिशोर प्रसाद, पृ० 88
29. वहीं, पृ० 95
30. राजेन्द्र प्रसाद, आत्मकथा, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ० 601